



रायपुर अंचल का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक वैभव

आकाश बाघमारे, शोधार्थी, डिश्वर नाथ खुटे, पीएच-डी, शोध निर्देशक, इतिहास विभाग
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

आकाश बाघमारे, शोधार्थी
डिश्वर नाथ खुटे, पीएच-डी, शोध निर्देशक
E-mail : akashbagmare90@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/03/2026
Revised on : 29/05/2026
Accepted on : 07/06/2026
Overall Similarity : 00% on 30/05/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: May 30, 2026 (02:40 PM)
Matches: 0 / 3579 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ का भारत में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। छत्तीसगढ़ को आर्य एवं दक्षिण सभ्यताओं का मिलन स्थली भी कहा जाता है, जहाँ अनेक दुर्लभ पुरातात्विक व ऐतिहासिक अवशेष देखने को मिलते हैं। छत्तीसगढ़ का रायपुर जिला भी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण 01 नवंबर, 2000 ई. को देश के 26वें राज्य के रूप में हुआ। राज्य की सीमायें सात राज्यों उत्तरप्रदेश, झारखण्ड, उड़ीसा, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश की सीमाओं से लगी हुई हैं, फलस्वरूप यहां की स्थानीय लोक संस्कृतियों में इन सीमावर्ती राज्यों की झलक भी दृष्टिगोचर होती है। छत्तीसगढ़ के तीज-त्यौहार व मेले कृषि संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। प्राचीन काल में रायपुर जिला दक्षिण कोसल का एक अभिन्न अंग था। रायपुर जिले में विभिन्न दर्शनीय स्थल हैं जिसका ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व आज भी विद्यमान है। रायपुर जिले में स्थित आरंग, रीवां, चम्पारण्य, महादेव घाट, घड़ी चौक, दूधाधारी मठ, बूढ़ा तालाब, नवागांव, सरोना, बीरगांव, पुरानी बस्ती ऐसे ही अन्य प्रमुख स्थल हैं जहां से विभिन्न मंदिर व अन्य प्रमुख स्मारक प्राप्त हुये हैं। इन स्थलों के अध्ययन के फलस्वरूप हमें इनकी ऐतिहासिक व सांस्कृतिक इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

मुख्य शब्द

रायपुर, दक्षिण कोसल, ऐतिहासिक स्थल, नागर शैली, तालाब, संस्कृति.

उद्देश्य

रायपुर जिले का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वैभव छत्तीसगढ़ ही नहीं अपितु भारत की समृद्ध परंपरा, लोकसंस्कृति व ऐतिहासिक धरोहर का महत्वपूर्ण अंग है। इस विषय के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य रायपुर जिले की प्राचीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परंपराओं, लोकजीवन, कला, स्थापत्य तथा सामाजिक विकास को समझना और संरक्षित करना है। रायपुर का इतिहास विभिन्न राजवंशों विशेष रूप से कलचुरी

शासकों के शासन का केन्द्र रहा है। यहां के किले, मंदिर, पुरातात्विक अवशेष और ऐतिहासिक स्थल जिले की गौरवशाली विरासत को प्रदर्शित करते हैं। इनके अध्ययन से विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को क्षेत्रीय इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

रायपुर जिले के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वैभव का अध्ययन पर्यटन विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यदि जिले के ऐतिहासिक स्थलों, मंदिरों, संग्रहालयों और सांस्कृतिक आयोजनों का उचित प्रचार-प्रसार किया जाये, तो यह क्षेत्र पर्यटन का प्रमुख केन्द्र बन सकता है। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे तथा जिले की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

अंततः रायपुर जिले के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक वैभव का अध्ययन केवल अतीत को जानने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने का आधार भी है। यह अध्ययन समाज को अपनी पहचान, परंपरा और गौरवशाली विरासत से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

रायपुर का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परिचय

प्राचीनकाल में रायपुर जिला दक्षिण कोसल का एक अभिन्न अंग था तथापि आद्य वैदिक साहित्य में विदेह या कोसल का कोई उल्लेख नहीं है। इनका प्रथम बार उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। पौराणिक सूची के अनुसार कोसल के 31 इक्ष्वाकु राजा हुये थे और इनमें से प्रथम राजा वृहद्बल था। वह महाभारत युद्ध में मारा गया था तथापि इस पौराणिक उपाख्यान से ज्ञात होता है कि राजा दशरथ का विवाह दूसरे कोसल की राजकुमारी कौशल्या के साथ हुआ था, यह अनुमान लगाया जाता है कि सम्भवतः दक्षिण कोसल इक्ष्वाकु राजवंश का एक उपनिवेश था।¹

ऐसा अनुमान किया जाता है कि छ.ग. का भूभाग नंदों और मौर्यों के विस्तृत साम्राज्य के अंतर्गत था। चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा-विवरण से यह अनुमान होता है कि बौद्ध सम्राट मौर्य अशोक छत्तीसगढ़ से ही होकर दक्षिण गये होंगे और तभी उन्हें दक्षिण कोसल की राजधानी में स्तूप तथा अन्य प्रासादों का निर्माण कराने का अवसर मिला होगा। नंद-मौर्य काल के चांदी के सिक्के रायपुर जिले के तारापुर में प्राप्त हुये हैं।² ह्वेनसांग के वृत्तांत से ऐसा प्रतीत होता है कि संभवतः वर्तमान रायपुर जिले का कम से कम कुछ भाग दक्षिण के सातवाहन शासकों के आधिपत्य का एक भाग था।³

दक्षिण कोसल में सातवाहन वंशीय राजों के आधिपत्य का पता कुछ शिलालेखों से भी चलता है। सातवाहन काल का एक काष्ठ स्तंभ रायपुर संग्रहालय में है जो बिलासपुर जिले के किरारी नामक ग्राम के तालाब के बीच गड़ा हुआ था। ईसा की चौथी शताब्दी के मध्य में दक्षिण कोसल दो भागों में विभाजित था। उत्तरी भाग का राजा महेन्द्र था और दक्षिण भाग जो महाकांतार के नाम से प्रसिद्ध था, व्याघ्रराज द्वारा शासित होता था। राजिम से तेरह मील दूर कोपरा ग्राम में समुद्रगुप्त की पत्नी रुपा कुछ समय तक निवास करती रही। राजिम स्थित स्वर्णतीर्थ के तट पर स्वर्णेश्वर महादेव का इसी समय निर्माण कराया गया था।⁴

सन् 1960 में रायपुर जिले के पिटईबंद ग्राम में पाये गये 40 सिक्के, जिन पर महेन्द्रादित्य तथा क्रमादित्य (जो कुमारगुप्त तथा उसके पुत्र स्कंदगुप्त के द्योतक हैं) मुद्रालेख अंकित हैं, दक्षिण कोसल में गुप्तों के राजनैतिक प्रभाव की पुनः पुष्टि करते हैं। रायपुर जिले में आरंग में पाये गये भीमसेन द्वितीय के ताम्र-पट्ट पर गुप्त संवत् 282 तिथि स्पष्टतः अंकित है। यह इस तथ्य का निःसंदेह संकेत है कि 501 ई. तक महाकोसल या छत्तीसगढ़ में गुप्त सम्राटों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया गया था।⁵

रायपुर जिले में आरंग नामक एक ऐतिहासिक कस्बा है वहां एक ताम्रपत्र पाया गया है। उससे ज्ञात होता है कि ईसा की पाँचवीं शताब्दी में दक्षिण कोसल में राजर्षितुल्य कुल नामक कोई राजवंश राज्य करता था। यह ताम्रपत्र महाराज भीमसेन द्वितीय द्वारा सुवर्ण (सोन) नदी के तट से दिया गया था और इसमें भीमसेन द्वितीय द्वारा हरिस्वामी और बपस्वामी को दोण्डा में स्थित भटपल्लिका नामक ग्राम दान में दिये जाने का उल्लेख है। नलवंश का चौथा लेख सन् 700 ई. का राजिम (रायपुर जिले) के राजीवलोचन के मंदिर में लगा हुआ है। इसमें पृथ्वीराज के पुत्र विरुपाक्ष के उत्तराधिकारी विलासतुंग के द्वारा अपने स्वर्गीय पुत्र के पुण्य की वृद्धि के लिये विष्णुजी के मंदिर का निर्माण करने का उल्लेख है।

शरभपुरीय वंश के संस्थापक शरभराज थे, शरभराज के पुत्र का नाम नरेन्द्र था। नरेन्द्रकालीन दो ताम्रपत्र प्राप्त हुये हैं— एक पिपरदुला (सारंगढ़ के अंतर्गत) में और दूसरा कुरुद (तत्कालीन जिला रायपुर) में। शरभपुरीय शासक जयराज उर्फ मानमात्र उर्फ दुर्गराज के कुल तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुये हैं। इनमें से एक आरंग में और दो मल्लार में प्राप्त हुये हैं। जयराज के ज्येष्ठ पुत्र सुदेवराज के 6 ताम्रपत्र प्राप्त हुये हैं, इनमें से रायपुर से प्राप्त ताम्रपत्र में उसके राज्यारोहण के दसवें वर्ष का उल्लेख है। इस वंश के अंतिम राजा सुदेव राज के समय में पाण्डुवंशियों ने दक्षिण कोसल पर विजय प्राप्त कर शरभपुरीय राजवंशों को समाप्त कर दिया और श्रीपुर (सिरपुर, जिला रायपुर) को अपनी राजधानी बनाया।

पाण्डु वंश के प्रमुख शासक बालार्जुन महाशिव गुप्त सन् 595 ई. के लगभग सिंहासनारूढ़ हुआ और लगभग 60 वर्ष तक राज्य करता रहा। बालार्जुन महाशिवगुप्त के चार ताम्रपत्र अभी तक बारदुला, लोधिया, मल्लार तथा बोंडा नामक स्थानों से प्राप्त हुये हैं। इन ताम्रपत्रों से जानकारी मिलती है कि महाशिवगुप्त के राज्य का विस्तार रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़ आदि जिलों के उस पार तक विस्तृत था। तत्कालीन प्रायः सभी शिलालेख सिरपुर ही में उपलब्ध हुये हैं जो संख्या में इतने अधिक हैं कि जान पड़ता है कि वहाँ निर्माण कार्य अविराम चलता रहता था।¹ रेवाराम बाबू के इतिहास के अनुसार, ईसा की 15वीं सदी में रतनपुर के कलचुरि (हैहयवंशी) राजा जगन्नाथसिंह के दो पुत्र हुये – 1. वीरसिंगदेव और 2. देवसिंगदेव। ज्येष्ठपुत्र होने के कारण वीरसिंगदेव को तो रतनपुर की राजगद्दी मिली और उसके वंशज पीढ़ीदर पीढ़ी रतनपुर के राजा होते गये। इसी समय राज्य का बंटवारा कर दिया गया और छोटे भाई देवनाथसिंह को रायपुर राज्य (शिवनाथ नदी का दक्षिण भाग) दिया गया।

रायपुर में सं. 1458 और खल्लारी में संवत् 1471 विक्रम के जो शिलालेख प्राप्त हुये हैं उनमें राय या हरि ब्रह्म देव को रायपुर का राजा बताया गया है। इन शिलालेखों तथा रेवाराम बाबू के इतिहास पर से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रतनपुर के कलचुरि राजवंश में आपसी झगड़ें शुरू हो गये थे और उसी वंश का कोई भाई, भतीजा या चाचा लक्ष्मीदेव रायपुर में आकर जम गया था फिर लक्ष्मीदेव का पुत्र सिंघण हुआ जिसे सं. 1471 के शिलालेख में शत्रुओं के 18 गढ़ जीत लेने का यश प्रदान किया गया है। सिंघण का पुत्र रामचंद्र हुआ जिसे इस शिलालेख में रामदेव कहा गया है। रामदेव का पुत्र ब्रह्मदेव हुआ।

ब्रह्मदेव के समय में संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य का कलचुरियों द्वारा पक्का बंटवारा हो गया होगा और देवनाथसिंह के पुत्र केशवदेव को रायपुर की गद्दी और विवाद मिटाने के लिये लक्ष्मीदेव के वंशज को खल्वटिका (खलत्री, अब खलारी) का क्षेत्र दे दिया गया होगा अन्यथा ब्रह्मदेव के शिलालेख में खल्वटिका को मुख्य राजधानी बताने की जरूरत क्या थी। इसके बाद खल्लारी में राजधानी बने रहने का पता नहीं चलता। इधर रायपुर राज्य में केशवदेव की पीढ़ी ही राज्य करती चली आई। खल्लारी में ब्रह्मदेव के समय में देवपाल मोची द्वारा निर्माण कराया गया नारायण का मंदिर है।

सन् 1818 से लेकर सन् 1830 तक अंग्रेजों ने छ.ग. के विभिन्न राजाओं के राजशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। इस बीच कर्नल एग्न्यू जो छ.ग. का सुप्रेन्टेंडेंट बनाकर भेजा गया था, पुरानी शासनप्रणाली को संशोधित रूप देता रहा। वह इस पद पर सन् 1818 से सन् 1825 तक बना रहा। पहले तो उसने रतनपुर से अपना सदर मुकाम हटा कर उसे रायपुर ले आया, क्योंकि रायपुर ऐसे स्थान पर स्थित है जहाँ से छ.ग. राज्य तथा देशी रियासतों पर सुविधापूर्वक निगरानी रखी जा सकती थी। उस समय से रायपुर नगर की उन्नति होने लगी और आज वह मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण नगरों में गिना जाता है। एग्न्यू ने धमतरी, बालोद, राजिम, रायपुर, रतनपुर आदि स्थानों के जंगली भागों को साफ कराके उन्हें कृषि कार्य के योग्य बनवाया। नई-नई सड़कें भी बनवाई गईं और छ.ग. के बीच से जाने वाली पुरानी सड़क की भी मरम्मत उसने करवाई।

रायपुर में हैहयवंशी राजाओं की लहुरी शाखा की राजधानी थी। रायपुर जिस स्थान पर पहले बसा था अब वह पुरानी बस्ती कहलाती है। राजधानी बनायी जाने के पहले यहां कोई बस्ती थी या नहीं, कहना कठिन है। अभी तो यही समझा जाता है कि राय ब्रह्मदेव द्वारा बसाये जाने के कारण इसका नाम रायपुर पड़ा। यहाँ सन् 1460 के लगभग निर्माण किये हुये किले के अवशेष यत्र तत्र पाये जाते हैं। किले के भीतर भूमिखंड में अनेक छोटे-छोटे मंदिर पाये गये हैं। किले के दोनों बाजू एक-एक बड़े तालाब हैं। दूधाधारी मठ और मंदिर का निर्माण 17वीं शताब्दी के मध्य हुआ था। उस समय यहाँ के राजा जैतसिंह थे। इन्होंने भोंसलों के राजगुरु स्वामी बलभद्रदास को निमंत्रित कर मठ और मंदिर के निर्माण हेतु भूमि और द्रव्य प्रदान किया था। स्वामी जी केवल दूध का आहार करते थे, फलतः यह मठ और मंदिर दूधाधारी के नाम से प्रसिद्ध है। उनके द्वारा फेंके हुये नीम का दातौन आज भी वृक्ष के रूप में विराजमान है।

सन् 1790 में एक अंग्रेज जिसका नाम लेकी था, अपने प्रवास के बीच रायपुर आया था। रायपुर के संबंध में वह अपने प्रवास-वर्णन में लिखता है “रायपुर एक बड़ा शहर है, जहां बड़ी संख्या में व्यापारी और धनिकगण निवास करते हैं। यहाँ एक किला है। उसके नीचे का भाग पत्थर का है तथा ऊपर का निर्माण मिट्टी से किया गया है। उसमें पांच द्वार तथा अनेक बुर्ज हैं। किले के पास एक सुंदर सरोवर है किंतु उसका जल अच्छा नहीं है।” बेगलर नाम के एक अंग्रेज ने सन् 1873-74 में यहां का दौरा किया था। इसने दूधाधारी के मंदिर में जो नक्काशी का काम किया गया है, उसकी बड़ी प्रशंसा की है। बेगलर को दूधाधारी के पुजारियों ने मंदिर को इतनी दूर से देखने दिया था कि उसकी परछाई या हवा तक मंदिर को स्पर्श न कर सके।²

1 फरवरी, 1855 ई. से छत्तीसगढ़ में अंग्रेजी राज स्थापित हुआ और उनकी प्रशासनिक व्यवस्था लागू हुई। 2 नवंबर, 1861 ई. को नये प्रांत के रूप में मध्यप्रांत का गठन किया गया। इनके अंतर्गत छ.ग. को एक संभाग का दर्जा दिया गया।

रायपुर, बिलासपुर, संबलपुर तीन जिलों में इसे विभाजित किया गया। अंग्रेजी प्रशासनिक व्यवस्था में एक बड़ा परिवर्तन तहसीलों का गठन किया जाना था। रायपुर, धमतरी, रतनपुर तहसीलों का गठन किया गया। ब्रिटिश आधिपत्य में आने के पश्चात् छत्तीसगढ़ में शिक्षा के क्षेत्र में काफी विकास हुआ। अंचल का पहला महाविद्यालय रायपुर में छ.ग. महाविद्यालय के नाम से खुला।⁹ रायपुर में कई प्रमुख ऐतिहासिक स्थल हैं, जिससे हमें यहां की संस्कृति को जानने का अवसर मिलता है। रायपुर में स्थित आरंग का नाम मुख्य रूप से एक पौराणिक घटना से सम्बद्ध है। उसके अनुसार यह आरा और अंग से व्युत्पन्न माना जाता है। आरंग में मंदिरों और मूर्तियों के असंख्य अवशेष मिलते हैं, जिससे यह स्पष्ट है कि किसी समय यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान रहा है। यहां से भाण्ड देवल मंदिर, बाघ देवल मंदिर, महामाया मंदिर, शिलालेख व जैन प्रतिमाएँ प्राप्त होती हैं।⁹

रीवा ग्राम में एक बड़ा तालाब और तीन टीले हैं, जिनका संबंध बौद्धों से जोड़ा जाता है। यह कहा जाता है कि लोरी गायन के लिये प्रसिद्ध बावन रावत नामक व्यक्ति इसी ग्राम का था।¹⁰ छत्तीसगढ़ के रीवा उत्खनन से मघवंशीय शासकों के सिक्के प्राप्त हुये हैं। इस प्रदेश में सातवाहनों के पश्चात् 'मघवंश' बांधवगढ़ का शासन रहा है।¹¹

कौशल्या माता मंदिर रायपुर जिले के आरंग विकासखण्ड के अंतर्गत चन्द्रखुरी नामक एक छोटे से ग्राम में स्थित है। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 27 कि.मी. पूर्व दिशा में एक सुंदर विशाल जलसेन जलाशय के मध्य में स्थित है। ऐसी मान्यता है कि चन्द्रखुरी ग्राम में तालाब के मध्य कौशल्या माता का यह मंदिर उत्तरवर्ती काल का उत्तम स्मारक है, जो इस क्षेत्र को ऐतिहासिक रामायण काल के दक्षिण कोसल से जोड़ती है। पुरातात्विक दृष्टि से मूल मंदिर का निर्माण आठवीं शताब्दी के प्रारंभ में सोमवंशी नरेशों के द्वारा कराया गया था। लोक आस्था का केन्द्र होने के कारण भिन्न-भिन्न समय पर इसका जीर्णोद्धार किया जाता रहा है। इस मंदिर को किनारे से जोड़ने के लिये सुबेन सेतु का निर्माण किया गया। छत्तीसगढ़ की पावन भूमि में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जननी माता कौशल्या का मंदिर, पूरे भारत में एक मात्र मंदिर होना इसकी दुर्लभता ही नहीं अपितु छत्तीसगढ़ राज्य की गौरवपूर्ण अस्मिता है।¹²

चम्पारण्य को वैष्णव मत के महान आचार्य वल्लभाचार्य का जन्म स्थान माना जाता है। इस मत के अनुयायी आचार्य को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये यहां आते हैं। इसके निकटवर्ती वन में महादेव का एक प्राचीन मंदिर है, जिसे चम्पकेश्वर महादेव कहा गया है। चम्पारण्य, चांपाझर या चंपारन के नाम से भी जाना जाता है। प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा के अवसर पर यहां मेला लगता है। रायपुर में 1402 ई. का एक शिलालेख पाया गया है और वह नागपुर संग्रहालय में है। यह राजा रामचंद्र के उत्तराधिकारी राजा ब्रह्मदेव के शासनकाल का है। उसमें यह भी बताया गया है कि नायक हजी राज ने रायपुर में हटकेश्वर महादेव का मंदिर बनवाया था। हटकेश्वर महादेव मंदिर की वास्तुकला पारंपरिक हिंदू शैली की है, जिसमें शिखर, मंडप और गर्भगृह प्रमुख हैं। मंदिरों की दीवारों और स्तंभों पर उकेरी गई मूर्तियाँ उत्कृष्ट कारीगरी का परिचय देती हैं। यह स्थापत्य शैली छत्तीसगढ़ के अन्य प्राचीन मंदिरों से साम्यता रखती है।¹³

राष्ट्रीय मार्ग क्रमांक 06 नागपुर-संबलपुर रोड पर 16 कि.मी. पर स्थित मंदिर हसौद से 12 कि.मी. दूर चंदखुरी गांव में बायें किनारे पर शिव मंदिर का स्मारक अवस्थित है। इस मंदिर का निर्माण 10-11 वीं शती ई. में हुआ था किंतु इस मंदिर का अलंकृत द्वार तोरण किसी दूसरे विनष्ट हुये सोमवंशी मंदिर का है। इसकी द्वार शाखाओं पर गंगा एवं यमुना नदी देवियों का अंकन है। सिरदल पर ललाट बिम्ब में गजलक्ष्मी बैठी हुई है जिसके एक ओर बाली-सुग्रीव के मल्लयुद्ध एवं मृत बाली का सिर गोद पर रखकर विलाप करती हुई तारा का करुण दृश्य प्रदर्शित है। नागर शैली में निर्मित यह पंचस्थ मंदिर है। इसमें मण्डप नहीं है। कुल मिलाकर यह क्षेत्रीय मंदिर का अच्छा उदाहरण है। प्राचीन ईंट निर्मित मंदिर नागपुर-संबलपुर राष्ट्रीय मार्ग पर रायपुर से 19 किमी पर स्थित नवागांव में तालाब के मेड़ पर स्थित है। ऊंचे चबूतरे पर विद्यमान इस पूर्वाभिमुखी मंदिर में गर्भगृह स्थित है। संभवतः यह मंदिर शिव मंदिर था। ऐसा प्रतीत होता है कि इस मंदिर का निर्माण 16-17 वीं शती में निर्मित हुये किसी ध्वस्त मंदिर की द्वार चौखट एवं स्तंभ इसमें प्रयुक्त हुये हैं। छत्तीसगढ़ में प्राप्त समकालीन ईंट निर्मित मंदिर वास्तु का अच्छा उदाहरण है।¹⁴

पंचमुखी शिव मंदिर सरोना, रायपुर में स्थित है। ऐसी मान्यता है कि सरोना क्षेत्र के जमींदार गुलाबसिंग की कोई औलाद नहीं थी तो वहां पधारे नागा साधुओं ने इस स्थान पर मंदिर निर्माण करवाने को कहा, पुत्र प्राप्ति के बाद जमीनदार द्वारा मंदिर का निर्माण पंचमुखी शिवलिंग के रूप में किया गया है, दो तालाबों के मध्य यह मंदिर अत्यंत शांत प्रतीत होता है।¹⁵ बंजर जमीन में उत्पन्न होने के कारण माता को बंजारी माता के नाम से जाना जाता है। लगभग 500 वर्ष पूर्व इस स्थान पर माता का बंजारा जाति जो मूलतः घुमन्तू होती है इन्हें इस स्थान पर एक पत्थर पर माता की आकृति दिखाई पड़ी इसलिये उन्होंने उस पत्थर को मंदिर के रूप में स्थापित किया था। रायपुर महामाया मंदिर का निर्माण 7वीं शताब्दी का माना जाता है, मंदिर की प्रमुख

विशेषता दोनों वेला के समय प्रातः के समय सूरज की किरणें समलेश्वरी माता के चरणों को पखारती है एवं संध्या के समय सूरज की किरणें महामाया मंदिर तक सीधे पहुंचती है, ये मंदिर मुख्यतः इन दोनों देवियों को समर्पित माना जाता है। इस मंदिर में स्थापित गुंबद का आकार देवी लक्ष्मी के श्रीयंत्र से मिलता है।¹⁶

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय मूलतः नंदगांव के महंत घासीदास द्वारा निर्मित कराया गया था। यह संग्रहालय शिलालेख, मूर्तियां, स्थापत्य सिक्कों आदि के पुरातत्वीय संग्रहण और प्राकृतिक इतिहास तथा नृत्य विज्ञान की सामग्री के लिये प्रसिद्ध है। संग्रहालय की ओर से ऐसी पुस्तकें और पेम्पलेट प्रकाशित किये गये हैं, जिनमें संग्रहालय में संग्रहीत वस्तुओं की जानकारी प्रदान की गई है।¹⁷

नगर घड़ी रायपुर, छत्तीसगढ़ की राजधानी का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। यह रायपुर के मध्य क्षेत्र में स्थित है। यह घड़ी न केवल समय बताने का कार्य करती है, बल्कि यह शहर की विरासत और सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। नगर घड़ी का निर्माण 1995 में रायपुर नगर निगम द्वारा किया गया था। उस वक्त डायल के पीछे मैकेनिकल पद्धति से चलने वाली घड़ी में घंटा पूरा हो जाने के बाद घड़ी की ऊंचाई पर लगे पीतल के घंटे की जोरदार आवाज से राजधानी गुंज उठा करती थी जिसे लगातार चलते रहने के लिये दिन में एक बार चाबी भरी जाती थी। 26 जनवरी, 2008 को आरडीए ने इसे बदलकर इलेक्ट्रॉनिक घड़ी लगाई जिसमें म्यूजिकल सिस्टम जोड़ा गया था। इसे शहर की बढ़ती आधुनिकता और सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक के रूप में स्थापित किया गया था।¹⁸

रायपुर जिले में बोली जाने वाली छत्तीसगढ़ी इस बोली का विशुद्ध या मानक रूप है। रायपुर, रायगढ़ तथा दुर्ग जिले छत्तीसगढ़ी बोली के गढ़ माने जाते हैं। वर्तमान समय में जिले के मुख्यालय रायपुर का महत्व छत्तीसगढ़ के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में बहुत अधिक बढ़ गया है और इसे इस क्षेत्र का सांस्कृतिक राजधानी कहा जा सकता है। रायपुर नगर में और उसके आस-पास बोली जाने वाली छत्तीसगढ़ी का जो रूप है, उसका उपयोग सामान्यतः लोक साहित्य के माध्यम के रूप में किया जा रहा है।¹⁹

प्राचीन तथा मध्यकाल में विपुल तथा विविध साहित्य और सांस्कृतिक परम्पराओं से रायपुर का जुड़ा होना भी परिलक्षित होता है। इस क्षेत्र की पवित्र नदियों के तटों पर विद्वान ऋषियों के आश्रम थे, जो यज्ञ धूम से सुगंधित और वेदपाठ से सदैव मुखरित रहा करते थे। इन आश्रमों में उच्चकोटि की शिक्षा दी जाती थी। चित्ताकर्षण जीर्ण-शीर्ण अवशेष, आरंग के जैन अवशेषों में पायी गई मूर्तियों तथा उत्कीर्णित प्रतिमाएं, राजिम की वैष्णव मूर्तियां, सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर और तुरतुरिया तथा सिरपुर के बौद्ध अवशेष इस क्षेत्र की तत्कालीन कला और सभ्यता को उजागर करते हैं।²⁰

निष्कर्ष

रायपुर जिले का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वैभव उसकी गौरवशाली परंपराओं, प्राचीन धरोहरों और समृद्ध लोकसांस्कृतिक प्रतीक है। यहाँ का इतिहास, कला तथा स्थापत्य कला जिले की विशिष्ट पहचान को दर्शाते हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रायपुर केवल प्रशासनिक और आर्थिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से भी अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है साथ ही, ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण आने वाली पीढ़ियों के लिये आवश्यक है, ताकि वे अपनी विरासत और इतिहास को समझ सकें। यह अध्ययन पर्यटन, शिक्षा और सामाजिक विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

अतः कहा जा सकता है कि रायपुर जिले का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वैभव न केवल छत्तीसगढ़ की पहचान है, बल्कि भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर भी है। इसके संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार के माध्यम से समाज और राष्ट्र दोनों को लाभ प्राप्त हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, राजेन्द्र (1992) *रायपुर गजेटियर*, जिला गजेटियर विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल, पृ. 39।
2. गुप्त, प्यारेलाल (1973) *प्राचीन छत्तीसगढ़*, रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग., प्रथम संस्करण, पृ. 44-45।
3. वर्मा, राजेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 40।
4. गुप्त, प्यारेलाल, पूर्वोक्त, पृ. 47, 49-50।

5. वर्मा, राजेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 42।
6. गुप्त, प्यारेलाल, पूर्वोक्त, पृ. 51–56, 61।
7. गुप्त, प्यारेलाल, पूर्वोक्त, पृ. 106–107, 136–137, 155–156।
8. बेहार, रामकुमार (2009) *छत्तीसगढ़ का इतिहास*, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, छ.ग., पृ. 151, 164–165।
9. वर्मा, राजेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 473।
10. वर्मा, राजेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 496।
11. पार्जिटर, एफ. ई. (1913), दी पुराणा टेक्स्ट ऑफ़ दी डायनेस्टिज ऑफ़ दी कली ऐज, हमफ्रे मिलफोर्ड ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बॉम्बे, पृ. 51, 73।
12. अटपट्ट, अजय (2015) *छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में राम*, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. 65–67।
13. छत्तीसगढ़ पर्यटन विभाग की अधिकारिक वेबसाइट, 2021, <https://cgtourism.gov.in>, Accessed on 25/03/2026.
14. धरोहर, राज्य के संरक्षित स्मारक, संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व, छत्तीसगढ़ शासन, पृ. 2–3।
15. पाण्डेय, ऋषिराज (2008) *छत्तीसगढ़ के कलचुरि*, छत्तीसगढ़ हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 242।
16. पाण्डेय, ऋषिराज, पूर्वोक्त, पृ. 18।
17. वर्मा, राजेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 491।
18. नवभारत टाइम्स, 15 जनवरी, 2022, 04:17 PM, <https://navbharattimes.indiatimes.com/>, Accessed on 22/03/2026.
19. वर्मा, राजेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 95।
20. वर्मा, राजेन्द्र, पूर्वोक्त, पृ. 380।
